विश्व न्याय मन्दिर

रिज़वान 2007

विश्व के बहाईयों को

परम प्रिय मित्रगण,

पाँच वर्षीय योजना का पहला साल इस बात का सार्थक प्रमाण है कि बहाउल्लाह के अनुयायियों ने श्रद्धा और समर्पण के भाव से 27 दिसम्बर, 2005 के हमारे संदेश में दिये गये काम करने के ढाँचे को अपनाया है और समूहों द्वारा प्रभुधर्म को स्वीकार किये जाने की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दिखलाई है। जिस किसी क्लस्टर में इस ढाँचे को पूरी तरह से लागू किया गया है वहाँ के सामुदायिक जीवन में अनुयायियों और उनके मित्रों की प्रतिभागिता और संख्यात्मक वृद्धि के मामलों में संतुलित प्रगति हो रही है। कुछ क्लस्टरों से तो हर कुछ महीनों में सैकड़ों की संख्या में नामांकन प्राप्त होने की रिपोर्ट मिली है और कुछ अन्य में अच्छी संख्या में नामांकन हुए हैं। विकास के मूल में इस महान कार्य के आध्यात्मिक स्वरूप की विस्तृत जानकारी रही है, साथ ही, निर्णय लेने वाली उन संस्थाओं और समितियों के बारे में बढ़ी हुई समझ रही है जिन्हें योजना की प्रमुख रूपरेखा द्वारा परिभाषित किया गया है।

इन विश्व स्तरीय योजनाओं की वर्तमान श्रृंखला को शुरू करने के पहले समूहों द्वारा प्रभुधर्म को स्वीकार किये जाने की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने के एकमात्र लक्ष्य पर ध्यान केन्द्रित करते हुए बहाई समुदाय तेजी से विस्तार की एक ऐसी अवस्था से दुनिया के अनेक भागों में गुजर चुका था जिसे अन्ततः बनाये रखना असम्भव था। चुनौती तब इस बात की नहीं है कि नये अनुयायियों की संख्या बढ़ा कर किस प्रकार प्रभुधर्म को स्वीकार करने वालों की कतार लम्बी की जाये, कम-से-कम उन क्षेत्रों में नहीं ही है जहाँ संदेश की ग्रहणशीलता सिद्ध हो चुकी है, अपितु चुनौती इस बात की है कि किस प्रकार उन्हें समुदाय के जीवन में शामिल किया जाये और उनके बीच से समुचित संख्या में वैसे लोगों को खड़ा किया जाये जो इसके और अधिक विस्तार के प्रति समर्पित हों। इस चुनौती का सामना करना बहाई विश्व के लिये इतना कठिन था कि हमने इसे चार वर्षीय योजना की एक प्रमुख विशेषता बनाई और राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभाओं से कहा कि वे प्रशिक्षण संस्थान की शक्ल में संस्थागत क्षमता को बनाने की ओर अधिक ध्यान दें ताकि मानव संसाधनों को विकसित किया जा सके। हमने संकेत दिया था कि अनुयायियों की लगातार बढ़ रही टुकड़ी को औपचारिक प्रशिक्षण के एक ऐसे कार्यक्रम से लाभ पाने की जरुरत पड़ेगी जो कार्यक्रम उन्हें ज्ञान और अन्तर्दृष्टि से भर देने के लिये तैयार किया गया है। साथ में, यह कार्यक्रम उन्हें वह कार्यकुशलता और योग्यता भी प्रदान कर सकेगा जिसकी जरुरत सेवा के वैसे कार्यों को करने के लिये पड़ेगी जो बड़े पैमाने पर हुए विस्तार और सुगठन को बनाये रख सकेंगे।

आज जब हम उन क्लस्टरों के काम-काज को देखते हैं जो विकास की एक संतुलित अवस्था में हैं तो पाते हैं कि उनमें प्रत्येक क्लस्टर में मित्रों ने संस्थान प्रक्रिया को मजबूत करने की दिशा में काम किया है और साथ में, प्रभुधर्म के सक्रिय समर्थकों की संख्या बढ़ाने का तौर-तरीका भी सीखा है, ताकि उनके प्रयासों के बीच ताल-मेल बनाने में एक कार्यकुशल पद्धति स्थापित की जा सके। उन्होंने उनकी व्यक्तिगत पहल का ताना-बाना बुना है और सामूहिक प्रयासों की एक ऐसी प्रभावशाली पद्धति दी है कि उनकी कार्यपद्धति में एकरूपता आ सके। उन्होंने अपनी गतिविधियों के चक्रों की योजना बनाने के लिये उपचक्र सूचनाएँ एकत्र कर उनका विश्लेषण करना भी सीख लिया है। अब देखा जा सकता है कि उन्होंने उन साधनों को पा लिया है जिनके सहारे वे विस्तार और सुगठन को साथ-साथ आगे बढ़ा सकें, जो स्थायी विकास की कुंजी है। निश्चित रूप से ऐसे उदाहरण प्रत्येक समर्पित अनुयायी को एक प्रणालीबद्ध तरीके से सीखने के पथ पर अटल रहने के लिये प्रेरित करेंगे, एक ऐसा पथ जो निर्धारित किया जा चुका है।

इन असाधारण प्रयासों के इन सालों की उपलब्धियाँ केवल उन क्लस्टरों तक ही सीमित नहीं है जहाँ बड़े पैमाने पर विस्तार और सुगठन के कार्य अब शुरू किये जा रहे हैं। चार वर्षीय योजना के दौरान, फिर बारह महीनों की योजना और पहली पाँच वर्षीय योजना के दौरान जो पहल की गई थी वह अनुयायियों के लिये उन परिस्थितियों के निर्माण में सहायक सिद्ध हुई। जिनके सहारे बड़ी संख्या में लोगों को सामुदायिक जीवन से जोड़ा जा सका। विश्व स्तरीय योजनाओं के तीन प्रतिभागियों की क्षमता के निर्माण में दस वर्षों तक चली लम्बी प्रक्रिया के लाभ अब व्यापक रूप से देखे जा सकते हैं। सर्वत्र मानव संसाधन विकास के गतिविज्ञान को समझने की जरुरत थी। सर्वत्र मित्रों को संतुलित विकास की जरुरतों को जानना था, ताकि वे प्रणालीबद्ध काम करने के तरीकों को बढ़ावा दे सकें और ध्यान भंग करने वाले कामों से बच सकें, ताकि सामूहिक रूप से निर्णय लेने के मूल तत्वों को समुदाय की जड़ तक ले जा सकें और ऐसे समुदायों का निर्माण कर सकें जिनका एक निश्चित लक्ष्य हो, ताकि सब की प्रतिभागिता को प्रोत्साहित कर सकें और समाज के विभिन्न वर्गों को अपनी गतिविधियों में समायोजित कर सकें, ख़ासतौर पर बच्चों और किशोरों को, जो प्रभुधर्म के भविष्य के समर्थक हैं और उसकी सभ्यता के निर्माता।

इतना ठोस आधार तैयार किया जा चुका है, प्रत्येक अनुयायी के मन-मानस में सबसे पहले प्रभुधर्म का शिक्षण देने की बात आनी चाहिये, चाहे अनौपचारिक बैठकों में वे अपने मित्रों को संदेश देने का व्यक्तिगत प्रयास करें और तब उन्हें मूल गतिविधियों से जोड़ें अथवा इन गतिविधियों का इस्तेमाल शिक्षण के प्राथमिक साधन के रूप में करें, चाहे किसी क्लस्टर में प्रारम्भिक प्रयास के रूप में बच्चों और किशोरों के साथ काम करें अथवा पुरानी पीढ़ी पर पहले अपना ध्यान केन्द्रित करें, चाहे सामूहिक प्रयास के तहत सघन अभियान के एक हिस्से के रूप में समूह बनाकर वे

परिवारों के बीच जाएँ अथवा जिज्ञासुओं के घर समय-समय पर जाएँ -- ये कुछ ऐसे निर्णय हैं जो परिस्थितियों और सम्भावनाओं तथा जिन लोगों के पास जाना है उनके हाव-भाव और स्वभाव के अनुसार ही लिये जा सकते हैं। एक बात जो सबको अवश्य ही स्वीकार करनी चाहिये वह है -- आध्यात्मिक सम्पोषण से वंचित निराशा के घोर अंधकार में डूब रही मानवजाति की सबसे बड़ी जरुरत और प्रभुधर्म का शिक्षण देने की हमारी जिम्मेदारी की सबसे बड़ी आवश्यकता, जिस जिम्मेदारी को 'सर्वमहान नाम' के समुदाय के सदस्य के रूप में हममें से प्रत्येक को सौंपा गया है।

बहाउल्लाह ने अपने अनुयायियों को प्रभुधर्म का शिक्षण देने का आदेश दिया है। हज़ारोहज़ार लोग पूरी ऊर्जा के साथ योजना के साधनों का इस्तेमाल करते हुए बहाउल्लाह के प्रकटीकरण के महासागर की ओर लोगों को ले जाने का मार्ग प्रशस्त कर चुके हैं। हम आशा भरी दृष्टि के साथ उस दिन की ओर निहार रहे हैं जब प्रत्येक अनुयायी के जीवन में प्रभुधर्म का शिक्षण देने का प्रबल अनुराग जगेगा और जब समुदाय की एकता इतनी मजबूत होगी कि भावातिरेक की यह अवस्था सेवा के क्षेत्र में अथक कार्यव्यापार को अभिव्यक्ति प्रदान करेगी। आपके लिये हमारी यह उत्कट आशा है और है पवित्र समाधि पर हमारी सर्वाधिक भक्तिमय प्रार्थनाओं का विषय।

-विश्व न्याय मंदिर